द ग्लोबल टाइम्स
सोमवार, सितम्बर 14, 2026

स्काउट्स शिविरः रोमांचक यात्रा

उन्नति त्यागी, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल,
वसुंधरा सैक्टर 6, कक्षा 9 ए

सुबह की ठंडी हवाएँ, ऊँचे-ऊँचे पहाड़, चारों ओर फैली हरियाली और रोमांच से भरा उत्साह — कुछ ऐसा ही अद्भुत अनुभव रहा भारत स्काउट एंड गाइड के राज्य साहसिक शिविर का। शीतलाखेत में 25 अप्रैल से 30 अप्रैल तक आयोजित इस रोमांचक यात्रा में ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल के 21 विद्यार्थियों और 2 मार्गदर्शक शिक्षकों ने भाग लिया। शिविर का संचालन अमित कुमार सैनी (ASOC – Assistant State Organisation Commissioner)) के कुशल निर्देशन में हुआ।

जैसे ही हम उत्तराखंड की सुंदर वादियों में पहुँचे, ऐसा लगा मानो प्रकृति ने अपनी बाँहें फैलाकर हमारा स्वागत किया हो। ठंडी हवाएँ, बादलों से ढके पहाड़ और पक्षियों की मधुर आवाजें मन को आनंद से भर रही थीं। हर विद्यार्थी के चेहरे पर उत्साह साफ दिखाई दे रहा था, क्योंकि सबको पता था कि आने वाले दिन रोमांच से भरपूर होने वाले हैं।

शिविर की शुरुआत प्रतिदिन ऊर्जा और अनुशासन के साथ होती थी। सुबह-सुबह व्यायाम, ध्वजारोहण, 'बीएसजी' प्रार्थना और ध्वज गीत के साथ पूरा वातावरण देशभक्ति और उत्साह से गूँज उठता था। इसके बाद जुम्बा और योग ने सभी को नई ऊर्जा से भर दिया। असली रोमांच तो उसके बाद शुरू होता था। कभी ऊँचाई पर बनी रस्सियों पर संतुलन बनाना, तो कभी जंगलों के बीच ट्रैकिंग करना — हर गतिविधि एक नई चुनौती लेकर आती थी। विद्यार्थियों ने पूरे साहस के साथ लॉग बैलेंसिंग, कमांडो ब्रिज, मंकी क्रॉलिंग, टायर क्रॉलिंग, नेट क्रॉलिंग, बर्मा ब्रिज, ज़िपलाइन, वॉल क्लाइम्बिंग और स्काई साइक्लिंग जैसी गतिविधियों में भाग लिया। कई बार डर भी लगा, लेकिन दोस्तों के उत्साह और प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन ने हर चुनौती को आसान बना दिया।

सबसे रोमाँचक पल वह था जब विद्यार्थियों ने ऊँचाई पर रस्सियों के सहारे हाई रोप क्रॉस एक्टिविटी और स्काई साइक्लिंग की। नीचे गहरी घाटियाँ और ऊपर खुला आसमान — यह अनुभव हर किसी के लिए किसी फिल्मी दृश्य से कम नहीं था। वहीं जंगल ट्रैकिंग और नेचर ट्रैकिंग के दौरान विद्यार्थियों ने प्रकृति को बहुत करीब से महसूस किया। पूरा शिविर केवल साहसिक गतिविधियों तक सीमित नहीं था, बल्कि यहाँ विद्यार्थियों ने अनुशासन, टीमवर्क, आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता जैसे जीवन के महत्त्वपूर्ण पाठ भी सीखे। शिविर का अंतिम दिन भावुक कर देने वाला था। रात में आयोजित भव्य कैम्प फायर ने पूरे माहौल को आनंद और उत्साह से भर दिया। कैम्प फायर गीत, नृत्य, संगीत और विद्यार्थियों की शानदार प्रस्तुतियों ने वातावरण को जीवंत बना दिया। हँसी, तालियों और गीतों के बीच ऐसा लग रहा था मानो यह पल कभी समाप्त न हो। अंत में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। जब विद्यार्थियों ने अपने हाथों में प्रमाण-पत्र लिए, तब उनके चेहरे पर गर्व और खुशी साफ झलक रही थी।

यह साहसिक शिविर केवल एक यात्रा नहीं था, बल्कि जीवनभर याद रहने वाला ऐसा अनुभव था जिसने हर विद्यार्थी को साहसी, आत्मविश्वासी बना दिया और प्रकृति के और भी करीब ला दिया। जी टी

अंडमान की रोमांचक सैर

अबीर गुप्ता, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल,
नौएडा, कक्षा 9 सी

यात्राएँ केवल स्थान नहीं बदलतीं, वे हमारे विचारों और अनुभवों को भी नया रंग देती हैं। गर्मी की छुट्टियों में मैं, अपने माता-पिता के साथ अंडमान-निकोबार द्वीप समूह की यात्रा पर गया। यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे यादगार और रोमांचकारी यात्रा बन गई। चारों ओर फैला नीला समुद्र, सफेद रेत, ऊँचे नारियल के पेड़ और प्रकृति की अद्भुत सुंदरता देखकर ऐसा लग रहा था मानो हम किसी स्वर्ग में आ गए हों। हम दिल्ली से हवाई जहाज द्वारा पोर्ट ब्लेयर पहुँचे। पोर्ट ब्लेयर पहुँचते ही ठंडी समुद्री हवाओं ने हमारा स्वागत किया।

सबसे पहले हम प्रसिद्ध सेल्यूलर जेल देखने गए। वहाँ स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष और बलिदान की कहानियाँ सुनकर हृदय गर्व और भावुकता से भर उठा। शाम को आयोजित लाइट एंड साउंड शो ने हमें स्वतंत्रता आंदोलन की यादों से जोड़ दिया। ऐसा लग रहा था मानो इतिहास स्वयं हमारे सामने जीवित हो उठा हो। अगले दिन हम हैवलॉक द्वीप गए, जिसे अब स्वराज द्वीप कहा जाता है। वहाँ का प्रसिद्ध राधानगर बीच अत्यंत सुंदर था। समुद्र का नीला पानी और सूर्यास्त का दृश्य मन को मंत्रमुग्ध कर रहा था। मैंने पहली बार समुद्र में तैरने और रेत के घर बनाने का आनंद लिया। वहाँ मैंने स्कूबा डाइविंग भी की। समुद्र के भीतर रंग-बिरंगी मछलियाँ और सुंदर मूंगे देखकर मैं आश्चर्यचकित रह गया।

हमने वहाँ के स्थानीय बाजारों का भी भ्रमण किया। माँ ने सुंदर शंखों और सीपियों से बनी वस्तुएँ खरीदीं। वहाँ के लोग बहुत सरल और विनम्र थे। हमने समुद्री भोजन और नारियल पानी का भी आनंद लिया।

इस यात्रा ने मुझे प्रकृति के और करीब ला दिया। मैंने जाना कि समुद्र केवल जल का विशाल भंडार नहीं, बल्कि अनगिनत जीवों और प्राकृतिक सौंदर्य का संसार है। अंडमान-निकोबार की स्वच्छता और हरियाली ने मुझे पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया।

जब हमारी यात्रा समाप्त हुई तब मन में एक हल्की उदासी थी, क्योंकि मैं उस सुंदर स्थान को छोड़कर वापस लौट रहा था। परंतु अपने साथ मैं ढेर सारी मधुर यादें, रोमांचक अनुभव और प्रकृति के प्रति नया प्रेम लेकर लौटा। यह यात्रा मेरे जीवन की अविस्मरणीय यात्रा बन गई, जिसे मैं हमेशा याद रखूँगा। जी टी

गंगा की लहरों से बादलों की छाँव तक

अभ्या अग्रवाल, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल,
रायपुर, कक्षा 10

प्रकृति की गोद में बीते पल जीवन की अनमोल पूँजी होते हैं। उत्तराखंड को 'देवभूमि' कहा जाता है। यहाँ कण-कण में आध्यात्मिकता और सुंदरता वास करती है। उत्तराखंड के दो सबसे प्रसिद्ध गंतव्य— ऋषिकेश और मसूरी— में यह सब स्वयं अनुभव करने की चाह मुझे रायपुर से उत्तराखंड ले आई। लगभग साढ़े ग्यारह बजे हम इंदिरा गाँधी इंटरनेशनल विमान तल पर पहुँचे और वहाँ से शुरू की अपनी लहरों से वादियों तक की रोमांचक यात्रा। दिल्ली से मेरठ-मुजफ्फरनगर हाईवे से हम ऋषिकेश पहुँच गए। वहाँ की हवा में एक अलग महसूस थी। पहले हम त्रिवेणी घाट गए। शांति व भक्तिमय आरती का अनुपम संगम था।

अगले दिन हमने 'रिवर राफ्टिंग' का आनंद लिया। ठंडे पानी की लहरों से टकराना व 50-100 फीट गहरी नदी में तैरना और चप्पू चलाना, यह साहस और रोमांच का अलग ही अहसास था। हमने इस रोमांच की थकान को नजरअंदाज करते हुए अपनी यात्रा आगे बढ़ाई। गंगा नदी के ऊपर बने दो झूले—लक्ष्मण और राम झूला—ऋषिकेश की पहचान हैं। पुल पर चलते समय नीचे बहती कल-कल करती गंगा को देखना एक अद्भुत आभास था। शाम को हम परमार्थ घाट पहुँचे। सैकड़ों दीपों को गंगा की लहरों पर तैरते देख तथा शंखों व आरतियों की ध्वनि से मन भक्तिमय हो गया।

ऋषिकेश को अलविदा कह हम मसूरी की ओर बढ़े। मसूरी में हमने मॉल रोड की सैर की। वहाँ की रौनक, छोटी-बड़ी दुकानों में बिकते स्थानीय हस्तशिल्प ने दिल जीत लिया। गन हिल पर जाने की 'केबल-कार' यात्रा भी बहुत रोमांचकारी थी। हमने अपनी मसूरी यात्रा का अंत मॉल रोड की चहल-पहल के बीच किया। इस यात्रा से कुछ अनमोल अनुभव मिले। जहाँ मसूरी की गलियों की मैगी और केक, वहीं ऋषिकेश के शुद्ध सात्विक भोजन का स्वाद ही कुछ अलग होता है। यह बात भी समझ आई कि इन दोनों शहरों को एक-साथ अनुभव करने के लिए मार्च से मई तक का समय सबसे बेहतर है। यह यात्रा केवल घूमने-फिरने के बारे में नहीं थी, बल्कि खुद को प्रकृति के करीब लाने का एक जरिया थी। यह सफर मेरी जिंदगी की वह कहानी बन चुका है। जी टी

डायरी का पन्ना

भुमिका भूटानी, ऐमिटी ग्लोबल स्कूल
गुड़गाँव, कक्षा 10

प्रिय डायरी,

आज मैं उस अनुभव के बारे में लिखना चाहती हूँ जिसने मेरे मन पर गहरा और स्थायी प्रभाव छोड़ा है। वर्षों बाद किसी जंगल की यात्रा मेरे लिए अत्यंत अनोखा और अविस्मरणीय अनुभव रहा। गिर वन पहुँचते ही ऐसा लगा मानो मैं शहर की भागदौड़ और शोर-शराबे से बहुत दूर, प्रकृति की शांत और हरियाली से भरी एक अलग ही दुनिया में आ गई हूँ ।

वहाँ न ऊँची-ऊँची इमारतें थीं, न सड़कों का लगातार शोर, न इंटरनेट की फैली तारें, और न ही मोबाइल की निरंतर बजती घंटियाँ। चारों ओर केवल घनी हरियाली, खुला नीला आकाश, ताजगी भरी हवा तथा प्रकृति की मधुर ध्वनियाँ थीं।

शुरुआत में बिना इंटरनेट के रहना थोड़ा अजीब और असहज लगा, पर धीरे-धीरे वही सन्नाटा और प्राकृतिक शांति सबसे सुंदर लगने लगी। महसूस हुआ मानो मन में जमा सारा तनाव और थकान धीरे-धीरे पिघलकर हल्की हो रही हो और भीतर एक नई ऊर्जा का संचार हो रहा हो।

जंगल सफारी के दौरान एशियाई शेरों को उनके प्राकृतिक आवास में देखना रोमांचक अनुभव था लेकिन उससे भी अधिक यादगार वह गहरा सुकून था जो पूरे वातावरण में घुला हुआ था।

वापसी के समय मन वहाँ से लौटने को बिल्कुल तैयार नहीं था। लग रहा था मानो मैं उस शांति को पीछे छोड़कर फिर उसी तेज रफ़्तार जीवन में लौट रही हूँ। मुझे अहसास हुआ कि सच्ची शांति प्रकृति की गोद में मिलती है।